कुलदेवी- कुलदेवता

समस्त ब्रह्माण्ड जिससे चलायमान है वह है शिव और जो स्वयं शिव को चलायमान बनाती है वह है उनकी शक्ति, आदिशक्ति । बिना आदिशक्ति के शिव भी अचल है। वह शक्ति ही है जो शिव को परिपूर्ण करती है । यह आदिशक्ति भिन्न भिन्न रूपों में ब्रह्माण्ड की समस्त सजीव और निर्जीव वस्तुओं में विद्यमान है। यही शक्ति देवताओं में, असुरों में , यक्षों में , मनुष्यों में, वनस्पतियों में, जल में, थल में , संसार के प्रत्येक पदार्थ में भिन्न भिन्न मात्रा में उपस्थित है और देवताओं की शक्ति को हम उन देवो के नामों से जानते है जैसे - महेश्वर की शक्ति माहेश्वरी , विष्णु की शक्ति वैष्णवी , ब्रह्मा की शक्ति ब्रह्माणी , इंद्र की इंद्राणी , कुमार कार्तिकेय की कौमारी , इसी प्रकार हम देवों की शक्तियों को उन्ही के नाम से पूजते हैं। और यही शक्ति जब मानवों में उन्नत अवस्था में होती है तब वे मानव भी पूजनीय होते है.. जैसे राम , कृष्ण , बुद्ध इत्यादि। कुछ अन्य उदाहरणों में जिन मानवों को देवतुल्य माना गया है वे है संत नामदेव ,गुरु नानक , रामदेवजी, गोगाजी , पीपाजी, देवी करणी माता, जीण माता इत्यादि।

जब अपने परिवार को नकारात्मक शक्तियों से मुक्त करने के लिए इन देवताओं की शक्तियों और देवतुल्य मानवों की पूजा करना वंश परम्परा बन गया तब वे शक्तियां तथा मानव उन वंशो के कुलदेवी या कुलदेवता बने।

हिन्दू पारिवारिक व्यवस्था में कुलदेवता या कुलदेवी का स्थान हमेशा से रहा है। प्रत्येक हिन्दू परिवार किसी न किसी न किसी ऋषि के वंशज है, जिनसे हमें उनके गोत्र का पता चलता है| बाद में कर्मानुसार इनका विभाजन वर्णो में हो गया, जो बाद में उनकी विषेशता बन गया और वही कर्म उनकी पहचान बन गई और इसे जाति कहा जाने लगा।हमारे पूर्वजो ने अपने वंश- परिवार की नकारात्मक उर्जाओ और उनसे उत्पन्न बाधाओं से रक्षा करने के लिए एक पारलौकिक शक्ति का कुलदेवी के रूप में चुनाव किया और उन्हें पूजना शुरू किया। यह शक्ति उस वंश की उन्नति में नकारात्मक ऊर्जा को बाधाएं और विघ्न उत्पन्न करने से रोकती थी और उस कुलदेवी का पूजन उस वंश में पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा बन गया।

कुलदेवता या कुलदेवी का हमारे जीवन में बहुत महत्व होता है । इनकी पूजा आदिकाल से चलती आ रही है| इनके आशीर्वाद के बिना कोई भी शुभ कार्य नही होता है | ये वो देव या देवी है जो कुल की रक्षा के लिए हमेशा सुरक्षा घेरा बनाये रखते हैं । हम जो पूजा पाठ, व्रत कथा,विवाह ,जडुला तथा जो भी धार्मिक कार्य करते है उनको वो हमारे इष्टदेव तक पंहुचाते है । इनकी कृपा से ही कुल वंश की प्रगति होती है । कई बार परिवार में जब कष्ट आते हैं, हमारे ऊपर से कुलदेवी /कुलदेवता का सुरक्षा चक्र हट चुका होता है जिसके कारण नकारात्मक शक्तियां हम पर हावी हो जाती है । तब बुजुर्ग कुलदेवता या कुलदेवी को मनाने की बात करते हैं लेकिन आज आधुनिक युग में लोगो को ये ही नही पता कि हमारे

कुलदेवता या कुलदेवी कौन हैं ? भारत में कई समाज या जाति के कुलदेवी और देवता होते हैं। इसके अलावा पितृदेव भी होते हैं।

जन्म, विवाह आदि मांगलिक कार्यों में कुलदेवी या देवताओं के ठाम पर जाकर उनकी पूजा की जाती है या उनके नाम से स्तुति की जाती है। इसके अलावा एक ऐसा भी दिन होता है जबकि संबंधित कुल के लोग अपने देवी और देवता के ठाम पर इकट्ठा होते हैं।जिन लोगों को अपने कुलदेवी और देवता के बारे में नहीं मालूम है या जो भूल गए हैं, वे अपने कुल की शाखा और जड़ों से कट गए हैं।

सवाल यह है कि कुल देवता और कुलदेवी सभी के अलग-अलग क्यों होते हैं? इसका उत्तर यह है कि कुल अलग है, तो स्वाभाविक है कि कुलदेवी-देवता भी-अलग अलग ही होंगे। दरअसल, हजारों वर्षों से अपने कुल को संगठित करने और उसके इतिहास को संरक्षित करने के लिए ही कुलदेवी और देवताओं को एक निश्चित जगह पर स्थापित किया जाता था। वह जगह उस वंश या कुल के लोगों का मूल स्थान होता था।

उदाहरणार्थ हमारे दादा - परदादा ने किसी समय में कहीं से किसी भी कारणवश पलायन करके जब किसी दूसरी जगह रैन-बसेरा बसाया होगा तो निश्चित ही उन्होंने वहां पर एक छोटा सा मंदिर बनाया होगा, जहां पर हमारे कुलदेवी और देवता की मूर्तियां रखी होंगी। सभी उस मंदिर से जुड़े रहकर यह जानते थे कि हमारे कुल का मूल क्या है?

यह उस समय की बात है, जब लोगों को आक्रांताओं से बचने के लिए एक शहर से दूसरे शहर या एक राज्य से दूसरे राज्य में पलायन करना होता था। ऐसे में वे अपने साथ अपने कुल और जाति के लोगों को संगठित और बचाए रखने के लिए वे एक जगह ऐसा मंदिर बनाते थे, जहां पर कि उनके कुल के बिखरे हुए लोग इकट्ठा हो सकें।हमारे मंदिरों की सूची में इस तरह की जानकारी मिलती है |

पहले यह होता था कि उस मंदिर से जुड़े व्यक्ति के पास एक बड़ी-सी पोथी होती थी जिसमें वह उन लोगों के नाम, पते और गोत्र दर्ज करता था, जो आकर दर्ज करवाते थे। इस तरह एक ही कुल के लोगों का एक डाटा तैयार हो जाता था। यह कार्य वैसा ही था, जैसा कि गंगा किनारे बैठा तीर्थ पुरोहित या पंडे आपके कुल और गोत्र का नाम दर्ज करते हैं।

इसी तरह कुलदेवी और देवता हमे अपने पूर्वजों से ही नहीं जोड़ते बल्कि वह वर्तमान पीढ़ी के कुल/ खानदान के हजारों अनजान लोगों से भी मिलने का जरिया भी बनते हैं। इसीलिए कुलदेवी और कुल देवता को पूजने का महत्व है। इससे हम अपने वंशवृक्ष से जुड़े रहते हैं और यदि यह सत्य है कि आत्मा होती है और पूर्वज होते हैं, तो वे भी हमें कहीं से देख रहे होते हैं। उन्हें यह देखकर अच्छा लगता है और वे हमें ढेर सारे आशीर्वाद देते हैं।

गोहिल क्षत्रिय वंश की कुलदेवियाँ एवं उनके शस्त्र

हमारे समाज के भाट स्व **"गोहिल क्षत्रिय वंश उत्पत्ति गोत्रावली"** रामेश्वर भट्ट ने.का प्रकाशन संवत 2022चैत्र सुदी को किया था 2|उसमें उन्होने से अधिक गोत्र प्रकाशित किए हें जिन्हे यहाँ 400 वेबस्थल पर भी प्रकाशित किया है | यहाँ गोत्रावली में क्रमशः गोत्र ,वंश ,ऋषि गोत्र ,वेद ,कुलदेवी ,शाखा ,निकास तथा दशहरे पर पूजे जाने वाले शस्त्र की जानकारी दी गयी है |

गोत्र का अर्थ है, कि हम कौन से ऋषिकुल में से आये है या हमारा जन्म किस ऋषिकुल से संबन्धित है। किसी व्यक्ति की वंश परंपरा जहां से प्रारम्भ होती है, उस वंश का गोत्र भी वहीं से प्रचलित होता है। हम सभी जानते हैं कि हम किसी न किसी ऋषि की ही संतान हैं, इस प्रकार से जो वंश जिस ऋषि से प्रारम्भ हुआ है उसमें जन्म लेने वाला उस ऋषि का वंशज कहा जाता है | **गोहिल क्षत्रिय वंश में** हमारे जो गोत्र हैं उनके ऋषि हैं -वत्स ,वशिष्ठ ,गर्ग ,कश्यप ,वैजवाण,कौशिक ,अत्रिय,गौतम ,भारद्वाज ,भृगु ,शंडिल्य,अगस्त्य आदि | जिनके गोत्र ज्ञात न हों उन्हें कश्यपगोत्रीय माना जाता है।

स्व .रामेश्वर भट्ट द्वारा प्रकाशित **"गोहिल क्षत्रिय वंश उत्पत्ति गोत्रावली"** के अनुसार हम निम्न क्षत्रिय वंशों से संबन्धित हैं |

1. **सूर्यवंश शाखायें:-**

   1.गहलोत 2.सिसोदिया 3. राठौड 4. बडगूजर 5. कछवाह/कछवार 6. गौर/गौड़ 7. रेकवाल 8.सिकरवार

2. **चन्द्रवंश शाखायें:-**
   1.जादौन/यादव 2.भाटी 3.तोमर/तंवर
3. **अग्निवंश की शाखायें:-**
   1.चौहान 2.सोलंकी 3.परिहार 4.पमार/पँवार 5.बघेला 6.सोलंकी .
4. **ऋषिवंश की शाखायें:-**
   दहिया(दधीचि ऋषि के वंशज),बुंदेला(राठोर)
5. **चौहान वंश की शाखायें:-**
   1.हाडा 2.खींची 3.निर्वाण 4.मोहिल, 5.गोयलवाल 6.चावड्या, 7.क्षेत्रापक्ष्य

गोहिल क्षत्रीय छीपा समाज की कुलदेवियां

वेबस्थल पर स्वर्गीय रामेश्वर भाट के द्वारा प्रकाशित 400 से अधिक गोत्रों की कुलदेवियां एवं उनके शस्त्रों की जानकारी दी गई है| सभी समाज बंधुओं से आग्रह है कि वे अपनी कुलदेवी को पहचाने, अपने निकास स्थान को जाने तथा अपने गोत्र वालों को भी बताएं| उदाहरण के लिए आसरमा गोत्र वाले चौहान (अग्नि वंश)के हैं, उनका ऋषि गोत्र वत्स है या वे ऋषि वत्स के वंशज

हैं, उनका वेद सामवेद है, वे सामवेद की कौथुमी शाखा से संबंधित हैं, उनकी कुलदेवी आशापुरी है, वे पंढरपुर से निकले हुए हैं तथा इन की कुलदेवी का शस्त्र खांडा है| इसी तरह सब गोत्र वाले अपनी जानकारी गोत्रावली से प्राप्त कर सकते हैं|